3, 71, 438
प्रसारण संख्या का विश्व कीर्तिमान रचने वाली
भारत की एकमात्र बाल पत्रिका

सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी बाल मासिक
देवपुत्र

बाल शहीदों की गौरव गाथा

गुरुदासराम अग्रवाल

* रविचन्द्र गुप्ता

गुरुदासराम का जन्म १४ जुलाई सन् १९१४ को जीरा, फिरोजपुर (पंजाब) में श्री हरिचन्द्र अग्रवाल के पुत्र के रूप में हुआ था। बचपन में ही जब गुरूदास ने जलियाँ वाले बाग हत्याकाण्ड के बारे में सुना तो उसे केवल इतना ही अहसास हुआ कि अंग्रेज कौम हत्यारी है। जैसे–जैसे वह बड़ा होता गया उसका यह अहसास विश्वास में बदलता गया। लाला लाजपत राय की लाठी प्रहार से हत्या ने उसे विचलित कर दिया। यद्यपि अभी उसकी आयु भी छोटी ही थी। लेकिन उसने कठोर संकल्प ले लिया कि 'वह लाला जी की हत्या का बदला अवश्य लेगा।' यूँ तो ठीक एक माह बाद साण्डर्स का वध करके लाला जी की हत्या का बदला चन्द्रशेखर आजाद और उनके साथियों ने ले लिया। लेकिन गुरूदास का संकल्प तो अभी अधूरा ही था। वह स्वयं भी ऐसा ही ऐतिहासिक कार्य करना चाहता था।

गुरुदास को पता चला कि ३१ अक्टूबर, १९३० को जीरा जेल में बड़े पुलिस अधिकारियों की सभा होने वाली है। उसने अपने कुछ अन्य साथियों के साथ मिलकर जेल पर उसी दिन बम का धमाका कर दिया। अनेक अधिकारी हताहत हुए। पुलिस ने गुरुदासराम को उनके अन्य चार साथियों के साथ गिरफ्तार कर लिया। शेष भागने में कामयाब हो गए। अन्य साथियों के नाम जानने हेतु गुरुदास राम को कठोर यातनाएँ दी गईं। कोड़ों की मार से चमड़ी के रेशे हवा में उड़ने लगे। शरीर से जगह–जगह खून बहने लगा। लेकिन अन्त तक उसने कुछ नहीं बताया। गुरुदास राम को सरकार ने मारने की योजना बना ली। उसके भोजन में ऐसे तत्व मिला दिए गए कि वह तपेदिक की अंतिम अवस्था में पहुँच गया। ऐसी अवस्था में ही उसे मुक्त किया गया। लेकिन कुछ ही दिनों बाद २७ मई, १९३४ को उस महान क्रांतिवीर का शरीर पंचतत्व में विलीन हो गया। उस समय उसकी आयु केवल बीस वर्ष थी।